P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

-विभिन्न धर्म-संप्रदायों के धर्म-नेताओं के बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी साध्वी समताश्री जी द्वारा पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी का आशीर्वाद-संदेश प्राप्त करते हुए।

-उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी पूज्यवर पर लिखी 'हंस अकेला' श्री अरूण तिवारी से स्वीकार करते हुए। अन्य हैं साध्वी समताश्री जी, डॉ. सोहनवीर सिंह तथा श्री प्रदीप मल्होत्रा।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
जून, 2012

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

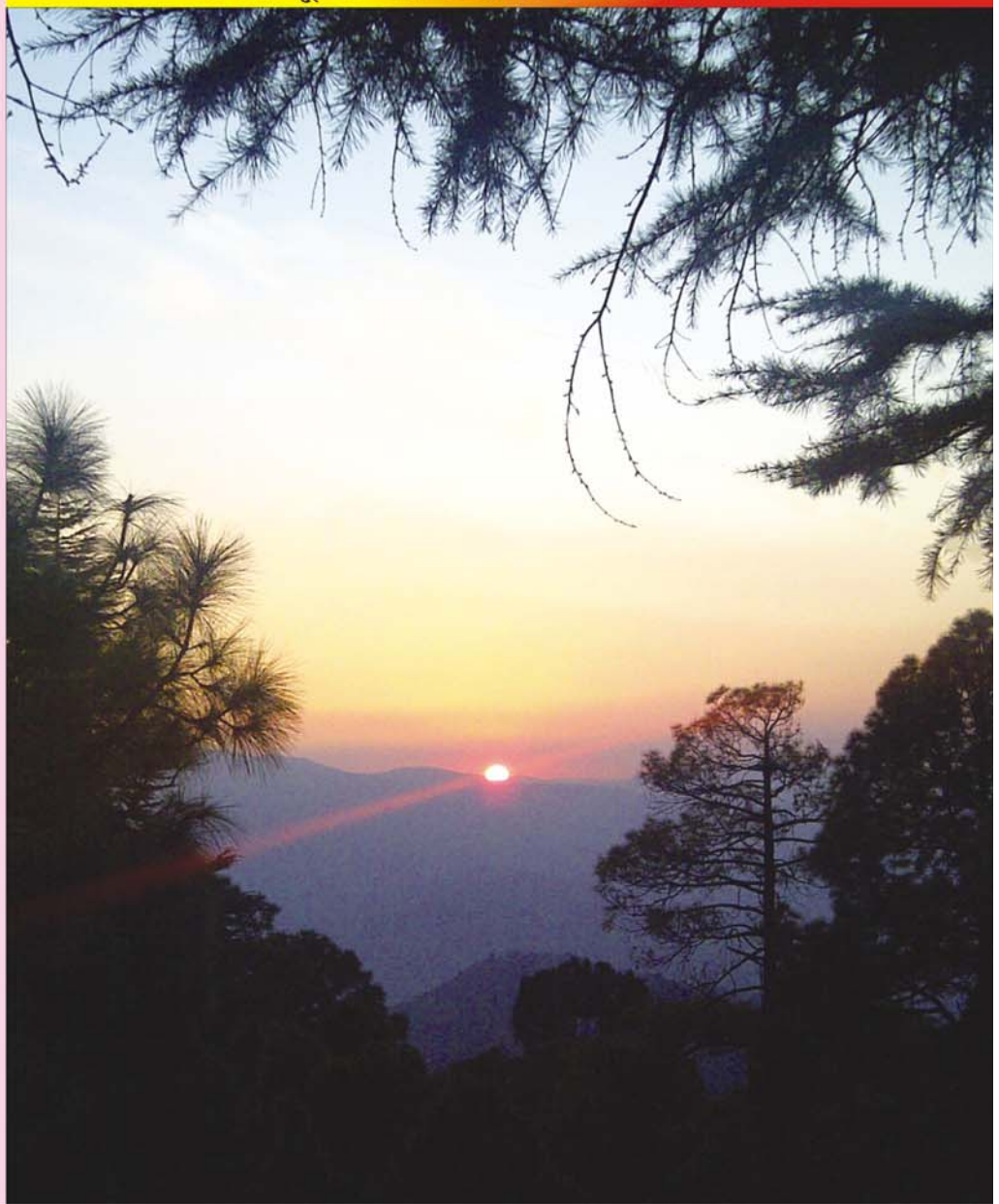

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 12 अंक : 06 जून, 2012

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.info
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष वाणी	-	5
02. बोध कथा	-	5
03. शाश्वत स्वर	-	6
04. गुरूदेव की कलम से	-	7
05. गजल	-	12
06 चिंतन-चिरंतन	-	13
07. गीतिका	-	15
08. कविता	-	16
09. कहानी	-	17
10. मंत्र की शक्ति	-	19
11. सोने का दर्द	-	20
12. विराटा की पद्मिनी	-	21
13. चुटकुले	-	23
14. ऐसे थे चाणक्य	-	24
15. जानकारी	-	26
16. ढपोर शंख	-	28
17. स्वास्थ्य	-	30
18. बोलें-तारे	-	31
19. समाचार दर्शन	-	33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेनू फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

आर्ष-वाणी

जहा से तिमिर विद्धंसे, उत्तिट्ठंते दिवायरे,
जलंते इव तेएणं, एवं भवइ बहुस्सुए।

(उत्तराध्ययन अध्ययन)

जैसे अन्धकार नष्ट होने पर सूर्योदय यानी, सूर्य निकलता है। उसी तरह ज्ञान के तेज से जाज्वल्यमान व्यक्ति बहुश्रुत व ज्ञानी कहलाता है।

बोध-कथा

धर्म का आधार

यह घटना उस समय की है, जब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन मद्रास के एक ईसाई मिशनरी स्कूल के छात्र थे। वह बचपन से बेहद कुशाग्र एवं तीव्र बुद्धि के थे। कम उम्र में ही उनकी गतिविधियां व उच्च विचार लोगों को हैरानी में डाल देते थे। एक बार उनकी कक्षा में एक अध्यापक पढ़ा रहे थे, जो बेहद संकीर्ण मनोवृत्ति के थे। पढ़ाने के क्रम में वह धर्म के बारे में बच्चों को बताने लगे और बताते-बताते ही वह हिंदू धर्म पर कटाक्ष करते हुए उसे दकियानूसी, रूढ़िवादी, अंधविश्वासी और न जाने क्या-क्या कहने लगे। बालक राधाकृष्णन अध्यापक की ये बातें सुन रहे थे। अध्यापक के बोलने के बाद राधाकृष्णन अपने स्थान पर खड़े होकर अध्यापक से बोले, 'सर! क्या आपका ईसाई मत दूसरे धर्मो की निंदा करने में विश्वास रखता है?' एक छोटे से बालक का इतना गूढ़ व गंभीर प्रश्न सुनकर अध्यापक चौंक गए। वाकई बालक की बात में शत-प्रतिशत सत्यता थी। दुनिया का प्रत्येक धर्म समानता व एकता का ही संदेश देता है। मगर अध्यापक एक नन्हे बालक के आगे अपनी पराजय कैसे मानते। वह संभलकर बोले, 'क्या हिंदू धर्म दूसरे धर्म का सम्मान करता है?' अध्यापक के यह कहते ही बालक राधाकृष्णन बोले, 'बिल्कुल सर। हिंदू धर्म किसी भी अन्य धर्म में कभी बुराई नहीं ढूंढता। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा था- पूर्णता के अनेक तरीके हैं। अनेक मार्ग हैं। हर मार्ग एक ही लक्ष्य पर पहुंचाता है। क्या इस भावना में सब धर्मों को स्थान नहीं मिलता, सर? इसलिए हर धर्म के पीछे एक ही भावना है, वह तो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह अपनी आस्था किस में मानता है? किंतु कोई भी धर्म किसी अन्य धर्म की निंदा करने की शिक्षा कभी नहीं देता। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो सभी धर्मों का सम्मान करे और उनकी अच्छी बातें ग्रहण करे।' राधाकृष्णन का जवाब सुनकर अध्यापक ने भविष्य में ऐसी बातें न करने का प्रण किया।

शाश्वत स्वर

बड़े भाग मानुष तन पावा

मनुष्य जीवन ईश्वर का सर्वोपरि उपहार है। एकमात्र मानव-जीवन ही वह अवसर है जिसमें जो भी चाहें, प्राप्त कर सकते हैं। इसका सदुपयोग हमें कल्पवृक्ष की भांति फल देता है।

प्रकृति में हमें कई परस्पर विरोधी चीजें दिखाई पड़ती हैं। जैसे प्रकाश और अंधकार, दिन और रात, गर्मी और सर्दी। ऐसे ही मनुष्य भी दो प्रकार के होते हैं। अच्छे और बूरे, सज्जन और दुर्जन, नैतिक और अनैतिक।

नैतिकता से युक्त मानव को ही अच्छा और सज्जन कहा जाता है। अनैतिक मनुष्य ही बुरा या दुर्जन होता है।

नैतिकता और अनैतिकता का क्या तात्पर्य है समाज में कुछ ऐसे स्थापित नियम होते हैं, सस्मरण होते हैं, परंपराएं होती हैं जैसे सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, शक्ति एवं सत्ता का दुरूपयोग नहीं करना आदि। जो इनका उल्लंघन करते है वे अनैतिक हैं। नैतिक मनुष्य सदा अपने कर्तव्यों का पालन करता है। और अपने अधिकारों का दुरूपयोग नहीं करता। हम छोटे और निजी स्वार्थ के लिए बड़े और सामाजिक हितों को त्यागने में थोड़ा भी संकोच नहीं करते। इसी कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सफल और सुखमय जीवन के लिए नैतिकता का बड़ा महत्व है। हमारे मनीषियों ने स्वर्ग और नरक की जो कल्पना की थी, वह किसी दूसरे लोक में नहीं, इस पृथ्वी पर विद्यमान हैं। नैतिक गुणों से युक्त प्रत्येक स्त्री-पुरुष का जीवन शांति और सुख का भंडार होता है। सादगी तथा उत्कृष्ट विचारों का प्रतीत होता है। और सच्चे अर्थ में स्वर्गिक होता है। अनैतिक मानव का जीवन नारकीय ही माना जाएगा। ऐसा व्यक्ति उचित-अनुचित का भेदभाव नहीं कर पाता। स्वार्थपूर्ति के लिए असद् कर्म से भी बाज नहीं आता। भौतिकता की चकाचौंध में हम सुखी संपन्न होने की साध भले ही पूरी कर लेते हैं।

मनुष्य जीवन के साथ अनेक जिम्मेदारियां है। मर्यादाएं हैं। जब हमारे चिंतन और कार्य, सिद्वांत और व्यवहार नैतिकता से ओतप्रोत होंगे, तभी हमारा जीवन सार्थक और सफल हो सकेगा। तब हमारा व्यक्तित्व विशाल होगा, दृष्टिकोण व्यापक होगा और हम मानव मात्र से प्रेम-भाव रख सकेंगे।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

कहां महावीर का विराट् दर्शन, कहां हमारा बौना चिंतन!

भगवान महावीर के जन्म-जयन्ती समारोह का भव्य आयोजन। हजारों नर-नारियों से खचाखच भरा विशाल प्रवचन मंडप। विशाल मंच पर एक ओर आसीन हैं प्रान्त के राज्यपाल महोदय, अनेक मंत्री-गण तथा जैन समाज के प्रमुख अग्रणी नेतागण। दूसरी ओर तीन तख्त बिछे हैं। दो तख्त मुनि-समुदाय के लिए तथा एक, साध्वी समुदाय के लिए। तीनों ही समुदाय जैन परंपरा के तीन धाराओं के प्रतिनिधि हैं। साध्वी समुदाय अपना आसन ग्रहण कर लेती हैं। हम भी एक तख्त तर आसीन हो जाते हैं। अभी एक परंपरा के मुनि-समुदाय का आगमन नहीं हुआ है।

कार्यक्रम में विलम्ब हो रहा है। मुनि-समुदाय का पदार्पण अभी भी नहीं हुआ है। अचानक एक हलचल होती है। कुछ श्रावक पीछे से मंच पर आते हैं। समानान्तर बिछे उस तख्त को वहां से हटा लेते हैं। मैं मन ही मन सोचता हूं, मुनि-गण का आगमन स्थगित हो गया लगता है। खाली तख्त मंच पर अच्छा नहीं लगता, शायद इसलिए उसे हटा लिया गया है।

इतने में देखता हूं कि उसी स्थान पर उस तख्त से अधिक ऊंचा, अधिक लम्बा-चौड़ा एक तख्त बिछा दिया गया है। अब पिछले तख्त को हटाने का रहस्य भी समझ में आ जाता है। मुनि-समुदाय मंच के पीछे खड़ा है। इस बीच मंच पर बैठे समाज के अग्रणी नेताओं में फुसफुसाहट होती है। तख्तों की असमानता को लेकर विरोध होता है। स्थिति को बिगड़ते देखकर वह ऊंचा तख्त वहां से हटा लिया जाता है, फिर वही पुराना तख्त वहां पर बिछा दिया जाता है।

मंच पर मुनि-समुदाय का पदार्पण होता है। जोर से जय-जय के नारे लगते हैं। मुनि-समुदाय के साथ भक्तगण भी हैं। भक्तों के हाथों में चतुराई से छुपाई हुई छोटी-छोटी चौकियां हैं। मुनि-समुदाय ज्योंहि उस तख्त के समीप पहुंचता है वे चौकियां

अत्यन्त शीघ्रता से तख्त पर बिछा दी जाती हैं। अब उस मुनि समुदाय का आसन हमारे तख्त से चार अंगुल ऊंचा हो जाता है। मुनि-समुदाय अविलम्ब उस पर विराजमान हो जाता है। भक्त लोग फिर जोर से एक बार जय का नारा लगा देते हैं। यह सब कुछ पलक झपकते ही हो जाता है। सब कोई देखते ही रह जाते हैं। मुनि-समुदाय की विजय-दर्प मुद्रा को सहज ही पढ़ा जा सकता है।

दूसरे संप्रदायों के समाज का मन इससे आहत होता है। जिस संप्रदाय से मेरा सम्बन्ध था, उससे संबद्ध श्रावक मेरे पास आते हैं। वे रोषपूर्ण स्वरों में मुझसे कहते हैं- यह सब कुछ बहुत गलत हो रहा है। ये लोग, जिनके हाथों में आज के समारोह का मंच है, अपनी परंपरा के मुनियों को ऊंचे पद पर बिठाना चाहते थे। हमारे विरोध पर उसे हटा लिया गया। अब इस तख्त पर ये चौकियां बिछा दी गई हैं। हम यह सहन नहीं कर सकते। इसके लिए हमें भी कुछ करना होगा।

उनकी बातों पर मन-ही-मन हंसते हुए मैंने पूछा- आप ही बताएं अब क्या किया जाए। उन्होंने कहा- हमने कुछ और चौकियां मंगवा ली हैं। आप भी अपने तख्त पर उन चौकियों को बिछा लें। मैंने दृढ़ता से उन्हें समझाया- इस सारे नाटक को अब खत्म होने दें। अब तक भी बहुत हो लिया है। मंच पर प्रान्त के संभ्रान्त सम्मानीय नागरिक है। मंच के सामने हजारों की जन-मेदिनी है। भगवान महावीर की जन्म-जयंती का समारोह है। भगवान का प्रमुख संदेश वीतरागता का है। हम उनके ही प्रतिनिधि मुनि-गण तख्त की ऊंचाई-नीचाई की गणित में उलझकर राग-द्वेष खड़ा करें, इससे अधिक बुरी बात और क्या होगी। आप शांतिपूर्वक अपना आसन ग्रहण कर लें। कम-से-कम मैं तो इस नाटक में शरीक ही नहीं होने वाला हूं।

मेरे इस दो-टूक उत्तर से श्रावक मौन तथा निराश चले गए। उनके चेहरों पर उनका भीतरी असंतोष साफ झलक रहा था। इस घटना से वे अपने संप्रदाय की हेठी समझ रहे थे, समाज का अपमान समझ रहे थे। अपने को आहत महसूस कर रहे थे।

एक रुग्ण मानसिकता

सवाल केवल इस एक घटना का नहीं है, एक संप्रदाय की मानसिकता का भी नहीं है। अलग-अलग चेहरे लिए ऐसी घटनाओं का एक लम्बा सिलसिला मेरे सामने है। हर घटना की अपनी प्रतिक्रिया होती है। हर प्रतिक्रिया फिर एक नई घटना को जन्म देती है। और क्रिया-प्रतिक्रिया का यह अंतहीन सिलसिला कभी भी खतम होता नजर नहीं

आता है। हर संप्रदाय एक मानसिक रुग्णता का शिकार है, अपने को ऊंचा तथा औरों को छोटा मानने की मनो-ग्रन्थि का शिकार है। हर परंपरा अपने को भगवान महावीर का सच्चा प्रतिनिधि समझती हैं। हर आचार्य अपने को भगवान महावीर का सच्चा उत्तराधिकारी मानता है। हर आम्नाय अपने को भगवान महावीर के चिंतन-दर्शन का तथागत संस्करण मानती है। स्वयं है असली, और सब हैं नकली। स्वयं है सम्यक्त्वी, शेष सारे मिथ्याती। फिर एक सम्यक्त्वी मिथ्यातवी के साथ एक मंच पर कैसे बैठ सकता है। बैठना पड़े तो उसका आसन मिथ्यात्वी के बराबर कैसे हो सकता है। चाहे चार अंगुल ही सही, अपना आसन औरों से ऊंचा तो होना ही चाहिए। यही नहीं, दो परम्पराओं के मुनि-गण जब आपस में मिलते हैं, तो परस्पर अभिवादन जैसा शिष्ट व्यवहार भी नहीं होता, केवल अपने हाथ मटकाकर रह जाते हैं। अभिवादन करने से उनकी बीत-रागमयी साधना शायद खंडित हो जाती है। परस्पर आहार पानी के आदान-प्रदान की तो कल्पना भी असंभव है। स्थानक, उपाश्रय तथा समाज के भवन भी दूसरे संप्रदाय के साधु-साध्वियों के उपयोग में नहीं आ सकते हैं। स्थिति तो यहां तक देखने को मिलती है कि श्वेताम्बर धर्मशाला दिगम्बर श्रावकों के तथा दिगम्बर धर्मशाला श्वेताम्बर श्रावकों के ठहरने के लिए काम में नहीं आ सकती। ऐसा कई तीर्थ-क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

वस्तुतः ये सारे अव्यवहार्य व्यवहार एक संप्रदाय-ग्रस्त मानसिकता की उपज हैं। सर्वत्र अपने को श्रेष्ठ तथा दूसरों को हीन मानने का भ्रम पल रहा है। आज के वैज्ञानिक वातावरण में पला तथा आधुनिक चिंतन के मुहावरों में ढला मुनि जब अपने धर्म को संप्रदाय-ग्रस्त तथा रुग्ण मानसिकता से त्रस्त नेताओं के हाथ में देखता है, तो उसका मन गहरी पीड़ा से भर जाए, यह स्वाभाविक है। कहां भगवान महावीर का विराट् दर्शन और कहां हमारा बौना चिन्तन। दोनों में कहीं कोई समानता भी है? कहीं तुलना भी है?

<u>दुहाई सिद्धान्तों की, कमाई अहं-तुप्ति की</u>

हर संप्रदाय अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए ऊंचे-ऊंचे सिद्धान्तों की दुहाई देता है। जबकि उन सिद्धान्तों की दुहार्द के नेपथ्य में अधिकांशतः अपनी अहं-तृप्ति की कमाई ही दिखाई देती है। अगर ऐसा नहीं होता तो अनेकान्त देर्शन के आलोक में संप्रदायों के छोटे-छोटे भेद आज तक क्यों नहीं सुलझा लिए गए। दिगम्बरत्व को एक महान् तप मानने में श्वेताम्बर-परम्परा को आपत्ति क्यों होनी चाहिए। दिगम्बरत्व को एक महान् तप मानने में श्वेताम्बर-परम्परा को अपत्ति क्यों नहीं होनी चाहिए। शरीर-मूर्छा से उपरत

यदि हुआ जा सकता है, तो लोकाचार-निर्वाह के लिए धारण किए जाने वाले वस्त्रों के ममत्व से मुक्त होने के स्वीकार में दिगम्बर परम्परा को कोई अड़चन क्यों होनी चाहिए? प्रतिमा की भाव-शुद्धि का एक सशक्त आलम्बन हो सकती है, उसके स्वीकार में स्थानकवासी तेरापंथी परम्परा को क्या बाधा हो सकती है? मुनि के निमित्त बनने वाले स्थानक तथा दया-दान की व्याख्या को लेकर जिसका जन्म हुआ, आज उसी तेरापंथ में शब्दान्तर और भाषान्तर से उससे ज्यादा ही हो रहा है, उस स्थिति में दोनों परम्पराएं एक-दूसरे के बीच दूरी क्यों रखना चाहती हैं? केवल इसलिए कि सबके अपने-अपने अहंकार इन भेदों से ही तृप्त हो सकते हैं। हमें भगवान महावीर के अनेकान्त-दर्शन की अपेक्षा, अपने-अपने सांप्रदायिक चिंतन अधिक प्रियकर हैं-

सबके अपने अहं हैं,
महावीर के लिए कोई प्यार नहीं है,
कोई भी अपने
भाषणों के प्रति ईमानदार नहीं है,
मर मिटने को सब
तैयार हैं अपनी संप्रदायों के लिए,
लेकिन महावीर के लिए
मरने को कोई तैयार नहीं है।

सच्चाई यह है भगवान महावीर भी हमारे लिए दोयम है पहला स्थान है अपने-अपने संप्रदायों का महावीर का स्वीकार भी तभी है, जब वे हमारे संप्रदाय की चौखट में फिट होते हों।

<u>संम्प्रदाय पहले, महावीर बाद में</u>

भगवान महावीर के पच्चीसवें निर्वाण-शताब्दी समारोह के समय मेरा चतुर्मास राजगृह पावापुरी में था। संम्प्रदायिक-सद्भावना का वह एक अप्रतिम अवसर था। एक बार वहां जैन समाज के बीच अनौपचारिक चर्चा चल रही थी। मैंने एक प्रश्न उठाया- हम लोग भगवान महावीर से रोज भाव-भरी प्रर्थना करते हैं- भगवन्, कृपा करके दर्शन दिलायें। भटकते हुए प्राणियों को सही रास्ता दिखाएं। भगवान तो निर्वाण को उपलब्ध हो गये हैं। इसलिए उनका वापस संसार में आने का प्रश्न ही नहीं है। किन्तु हमारी मानसिकता की असली तस्वीर सामने लाने के लिए मैं आपसे पूछना चाहता हूं, हमारी प्रार्थना पर करूणा

करके भगवान महावीर अगर हमारे बीच पधार जाएं, तो क्या हम उन्हें स्वीकार कर लेंगे? लोगों को प्रश्न जरा अटपटा लगा। बोले- मुनिश्री, इसमें पूछने जैसा क्या है? अगर भगवान इतनी कृपा कर दें, तो हम उन्हें अपनी आंखों पर बिठा लें। मैंने कहा- मुझे इसमें संशय है। क्या हम उनके सामने भी दिगम्बर-श्वेताम्बर का प्रश्न नहीं उठाएंगे, कि आप दिगम्बर हैं या श्वेताम्बर? एक भाई तुरन्त बोल उठा- यह तो पूछना पड़ेगा ही। मैंने कहा- अगर वे कह देते हैं, मैं दिगम्बर हूं, तो क्या श्वेताम्बर पीछे नहीं हट जाएंगे? वे अपने को श्वेताम्बर कह देते हैं, तो क्या दिगम्बर उन्हें अस्वीकार नहीं कर देंगे? उन्हें नकली महावीर करार नहीं देंगे? छोड़ें दिगम्बर-समाज को, सारे श्वेताम्बर भी उन्हें क्या मान लेंगे। क्या वहां भी मूर्ति-पूजा का सवाल नहीं उठेगा? मूर्ति-पूजा स्वीकार करने पर क्या स्थानकवासी-तेरापंथी तथा स्वीकार न करने पर मूर्ति-पूजक परम्परा उन्हें पीठ नहीं दिखा देगी? ठीक इसी तरह स्थानकवासी तथा तेरापंथी भी अपनी-अपनी मान्यताओं के बारे में क्या सवाल नहीं उठाएंगे? और अपनी मान्यताओं से मेल न खाने पर फिर क्या उन्हें स्वीकार लेंगे?

मेरे इस प्रश्न-विश्लेषण पर सारा समाज मौन निरुत्तर था। मैंने कहा- हमारी विडम्बना यहीं है कि महावीर के शिष्य कहलाते हुए भी हम महावीर को महावीर के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है। हमारे संम्प्रदाय की मान्यताओं की चौखट में अगर महावीर आते हैं, तब तो हमें वे स्वीकार हैं, नहीं तो नहीं, यह है हमारी मानसिकता। इस मानसिकता में परिवर्तन तभी सम्भव है जब हम अपने पंथ और मतवाद के आग्रहों से ऊपर उठकर तटस्थता से सोचने के लिए सावकाश हों। संम्प्रदाय आग्रह की नींव पर खड़े होते हैं। मुझे एक बार एक जैनेतर भाई ने पूछा- दिगम्बर-श्वेताम्बर में प्रमुख भेद क्या है? वे साहित्य-चेता थे। इसलिए मैंने कविता की भाषा में कहा-

अपने पंथ-मताग्रह से जब हमने नाता जोड़ लिया
महावीर की वाणी से सचमुच ही मुखड़ा मोड़ लिया
मुख्य भेद है यही दिगम्बर-श्वेताम्बर में, यों समझें,
किसी ने कपड़ा ओढ लिया ओर किसी ने कपड़ा छोड़ दिया।

<u>अनेकान्तवाद की प्रतिष्ठा हो</u>

काश! इन मतवादों के आग्रहों से हम मुक्त हो पाते। अनेकान्तवाद की प्रतिष्ठा अपने घर में तो कर पाते। दर्शन-जगत के शैल-शिखर पर आरूढ़ होकर भगवान महावीर ने जिस अनेकान्तवाद की उद्घोषणा की, हम चाहते हैं उस उद्घोषणा को पूरा विश्व सुने, जाने

और लाभ उठाए। किन्तु उस उद्घोषणा को सुनने की हमारी तैयारी विल्कुल नहीं है। खेद यही है हम औरों को सुनाना चाहते हैं, खुद सुनना नहीं चाहते।

एक रथ-यात्रा जुलूस में लोगों में जोश भरा जा रहा था कि इतने जोर से जय-जय कार के नारे लगाए जाएं, कि सिद्धशिला पर विराजमान भगवान महावीर तक हमारी आवाज पहुंच जाएं। मैंने उस प्रवचन-सभा में कहा- गगनभेदी नारों से आपने अपनी आवाज तो भगवान महावीर तक पहुंचा ही दी है, अब जरा यह कोशिश करें कि वह आवाज आप के भीतर तक भी पहुंच जाए। बड़ा आसान है औरों तक आवाज पहुंचाना। बड़ा ही कठिन है अपनी आवाज अपने तक पहुंचाना।

भगवान फरमाते हैं- जहां सत्य है वहां आग्रह नहीं है। जहां आग्रह है वहां सत्य नहीं है। अब हमें सोचना है कि हम आराधना सत्य की कर रहे हैं या आग्रह की, धर्म की कर रहे हैं या सम्प्रदाय की। मेरा निवेदन है राग-द्वेष की बदबूदार नालियों पर बिछे मतवाद और संप्रदायवाद के कीमती गलीचों का मोह छोड़े, और हम अपने को वीतराग-धर्म से जोड़े। यही भगवान महावीर द्वारा प्रणीत साधना है और यही धर्म की सच्ची प्रभावना है।

गजल

एक-सा दिल जब सभी के पास होता है,
हर किसी पर क्यों नहीं विश्वास होता है।

डूबने वाले को तिनका क्या बचायेगा,
इक सहारे का मगर एहसास होता है।

आदमी कोई भी कितना आम हो लेकिन,
वो किसी के वास्ते तो खास होता है।

राह जो अपनी बनाता लीक से हट कर,
वक्त उसका ही हमेशा दास होता है।

गालियां देता, दुआयें कोई देता है,
वो वही देता जो जिसके पास होता है।

-कमलेश द्विवेदी

जैन धर्म

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

जैन धर्म विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है। यह जितना पुराना है, उतना ही तरोताजा, वैज्ञानिक, व्यवहार्य और आडम्बरों से मुक्त भी है।

सामान्यतः पुरानी वस्तु जीर्ण-शीर्ण, रूढिग्रस्त, अव्यावहारिक और प्रदर्शन-प्रधान बन जाती है, पर जैन धर्म इसका अपवाद है। इसमें जितनी तेजस्विता और मौलिकता है, वह इसकी अपनी विशेषता है।

जैन धर्म का शाब्दिक अर्थ है- जिन यानी 'विजेताओं के द्वारा निरूपित किया गया धर्म।' यह धर्म राग-द्वेष को जीतने वाले वीतराग जिन भगवान के द्वारा निर्दिष्ट धर्म है और विजय के इच्छुक व्यक्तियों के लिए है।

इस काल-चक्र में जैन धर्म का निरूपण करने वाले ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर हो गए हैं, पर वर्तमान में जो जैन धर्म का स्वरूप उपलब्ध है, उसके निर्देशक और उपदेशक भगवान महावीर थे।

श्रमण भगवान महावीर चौबीसवें तीर्थंकर थे। आप एक राजघराने में जन्मे थे। वैभवपूर्ण वातावरण में पल-पुसकर भी विलासिता में नहीं फंसे। त्याग के पथ का अनुसरण किया और सुख-शान्ति चाहने वाले प्राणियों को भी त्याग का पथ बतलाया।

भगवान महावीर ने तीन मौलिक सिद्धान्त दिए- अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त। अहिंसा और अपरिग्रह का घोष फिर भी सुनाई देता था, किन्तु अनेकान्तवाद भगवान महावीर का सर्वथा नया दर्शन था।

जहां कोई ज्ञान-योग से मुक्ति की स्थापना करता था, कोई भक्ति-योग को मुक्ति का माध्यम बताता था, कोई कर्म-योग में विश्वास करता था, वहां भगवान ने सम्यक ज्ञान, सम्यक् आस्था और सम्यक् आचरण की समन्विति से मोक्ष की प्राप्ति बताई।

जहां कुछ दार्शनिक पदार्थों को कूटस्थ नित्य मानते थे, कुछ क्षण-क्षयी के सिद्धान्त को स्वीकार करते थे, कुछ लोग अमुक-अमुक पदार्थों को नित्य और अमुक को अनित्य मानते थे, वहां भगवान महावीर ने उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यात्मक पदार्थ की स्थापना कर नित्यानित्य के सिद्धान्त की घोषणा की।

जैन दर्शन के आधारभूत तत्त्व हैं- आत्मवाद, कर्मवाद, मोक्षवाद, आत्म-कर्तृत्व, पुनर्जन्म, पूर्वजन्म आदि।

जैन दर्शन में आत्मा को ही परम विकसित अवस्था में परमात्मा के रूप में स्वीकार किया गया है। जहां अन्य दर्शनों में भक्त भक्त ही रहता है वहां भगवान ने जैन दर्शन में भक्त को ही भगवान बनने का अवकाश दिया है।

सुख-दुःख, जन्म-मरण, संसार-मुक्ति- सब अपने कृत कर्मों का भोग है। दूसरा कोई किसी का भला-बुरा करने वाला नहीं है।

'आत्मैव अत्मनो बन्धु, आत्मैव रिपुरात्मनः।'

वन्ध और बन्ध के हेतु, मोक्ष और मोक्ष के हेतु- इन चारों का सम्यक् बोध जिस व्यक्ति को हो जाता है, वह शीघ्र ही संसार-भ्रमण से मुक्त हो जाता है। आत्मा को संसार में भटकाने वाले रागद्वेष या कषाय हैं। कषाय को क्षीण करने पर व्यक्ति की मुक्ति स्वतः हो जाती है।

यह संसार जिसकी न कोई सृष्टि करता है न कोई संहार, अनादिकाल से चला आ रहा है। और इसका कोई अन्त नहीं।

जैन धर्म मानवीय एकता का पोषक है। वह 'एकैव मानुषी जाति, आचारणे विभज्जते' को लेकर चलता है। वहां किसी तरह की वर्ण-व्यवस्था नहीं है। जाति में किसी को ऊंचा और किसी को नीचा मानना जैन दर्शन के विरुद्ध है। यहां पर मनुष्य की सत्-असत् कर्म से ही उसकी उच्चता और हीनता आंकी जाती है।

जीवन-शुद्धि का साधन धर्म किसी आश्रम व्यवस्था के आधार पर नहीं किया जाता। धर्म आचरण में अवस्था, लिंग, वर्ण, रंग, जाति और परिस्थिति का कोई प्रतिबंध नहीं है।

आहार-शुद्धि जैन धर्म का उज्ज्वल पक्ष है। जैन धर्मावलम्बियों की यह पहचान है कि वे मांस, मदिरा जैसे अभक्ष्य और उत्तेजक पदार्थों से परहेज करते हैं।

आहार में और भी कई तरह की शुद्धाशुद्धि का विवेक परमावश्यक है। शुद्ध आहार से ही मन पवित्र रह सकता है और पवित्र मन ही आत्मा का साक्षी है।

आचार-संहिता का जहां तक प्रश्न है, मुनि और गृहस्थ दोनों ही वर्गों के लिए भिन्न-भिन्न आचार, नियम, विधान बनाए गए हैं। फिर भी वहां बाह्य उपासना और क्रियाकाण्डों की अपेक्षा आन्तरिक तप पर विशेष बल दिया गया है।

कपितय लोगों की यह धारणा है कि जैन धर्म तो काय-क्लेश और तपस्या पर ही बल देता है, किन्तु यह धारणा सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण है। जैन धर्म ने जितना ध्यान, स्वाध्याय, भावना-शुद्धि, समता-भाव, मैत्री-भाव, सहिष्णुता पर बल दिया है, उतना तपस्या पर दिया ही नहीं।

भगवान ने कहा- दो दिन भूखे रहकर जितने कर्म काटे जाते हैं, शुद्ध मन से एक क्षण का ध्यान करके उससे भी अधिक कर्म का निर्जरण किया जा सकता है।

इस रूप में जैन धर्म का यह संक्षिप्त विवेचन है।

गीतिका

-साध्वी मंजुश्री

बिगड़ी बना दे भगवन, है शरण एक तेरा,
उजड़ी बसा दे दुनिया, कहाँ पे करूँ बसेरा।

फूलों को जहाँ भी समझा, निकली है तीखी शूले,
जहाँ रोशनी हैं जानी, वहाँ घोर अन्धेरा।

सर्वस्व जिसको समझा, अर्पण किया था जीवन,
दिखलाई पीठ उसने, धोखे का निकला डेरा।

खा-2 थपेड़े झूठे, दिल की गति है घायल,
है जीत पक्ष की यहॉ, खिले सवल का चेहरा।

अनन्त शक्ति धर आत्मा, चिर आत्मानन्द खोजो,
निर्भय तू बनजा मंजू' भय पाप का है डेरा।

तर्ज- संकल्प एक ही हो

कविता

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

जग में सद्गुरू ही एक सहारा, जीवन का है उजियारा
मतलबिया यह सारा संसार है, ओ बंदे सद्गुरू का होता सच्चा प्यार है।।

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, महेश्वर गुरू देवों के देव
गुरू ही परम ब्रह्म है नित उठ, गुरू की करिये सेव। (1)

गुरू गोविंद दोनों खड़े हो, किसके लागूं पांय
बलिहारी गुरूदेव की जो, गोविंद दिया बताय। (2)

गुरू कुम्हार सिस कुंभ है, जो गढ़-गढ़ काढै खोट
अंदर हाथ सहार दे, और ऊपर मारै चोट। (3)

सहजो गुरू दीपक दियो, रे नैना भए अनंत
आदि अंत अरू मज्झ में, अब दीस परै भगवंत। (4)

सतगुरू चंदन बावना जो, परस्यो पलटै काठ
रज्जब चेला चूक में रे, रहया बांस के ठाठ। (5)

यह तन विष की बेलडी रे, गुरू अमरित की खान
सीस दिये जो गुरू मिले, तो भी तू सस्ता मान। (6)

पारस और ''रूप'' संत में, बड़ो आंतरो जान
वो लोहा कंचन करे, वो करे आप समान। (7)

तर्ज-झूठी परदेशिया री प्रीत है।

कहानी

बड़े बोल

'सुनो जी... एक और खुशखबरी... अभिषेक का रिश्ता भी टूट गया।' रजनीश बाबू बड़े प्रफुल्लित थे।

'कौन अभिषेक...?' पत्नी ने पूछा। 'अरे वही अपने तिवारी जी का लड़का...।' रजनीश बाबू ने स्पष्ट किया। 'तो हमें प्रसन्न होने की क्या बात है... कोई न कोई बड़ा कारण ही रहा होगा, अन्यथा तब तक बात बनाई जा सकती है, तब तक सभी बात बनाने का प्रयास करते ही हैं...।' सहजभाव से कह गई सुरभि।

'अरे... तुम भी बड़ी भोली हो, समझती ही नहीं... आजकल लड़के-लड़कियां अपने माता-पिता द्वारा तय किए गए रिश्तों को महत्व ही कब देते हैं, जरूर अभिषेक ने भी अपने लिए कोई लड़की पहले से ही पसंद कर रखी होगी, उसका जरूर कहीं प्रेम प्रसंग चल रहा होगा।'

'सुनो जी... किसी के रिश्ते टूटने का इस प्रकार मजाक नहीं उड़ाया करते, अपनी भी कच्ची गृहस्थी है, अपने भी बेटे-बेटी जवान होते जा रहे हैं, यदि कल हमारे साथ ही ऐसा ही हुआ, तब किस मुंह से मजाक को मुंह दिखाओगे?' सुरभि ने चिंता व्यक्ति की।

'मेरे यहां ऐसा होगा ही क्यों... मेरे बच्चे तो मेरे कहने में हैं, कोई प्रेम-व्रेम के चक्कर में नहीं पड़ेगा, अपने बेटे का विवाह बिरादरी के ऊंचे खानदान में करूंगा और बेटी को भी ऐसे ही खानदान में ब्याहूंगा, जहां किसी चीज की कमी न हो।' गर्व से सीना फुलाते हुए रजनीश बाबू ने कहा।

'अच्छा हो कि तुम्हारी बात खरी उतरे, किंतु रजनीश बाबू की आदत में कोई फर्क नहीं पड़ा, वह मोहल्लेभर की गतिविधियों में तांक-झांक करने में पीछे नहीं रहते।

एक बार तो गजब ही हो गया जब गुप्ता जी की लड़की ने अपने कार्यालय में कार्य करने वाले गैर बिरादरी के युवक को गुप्ता जी के सामने लाकर खड़ा कर दिया तथा कहने लगी- 'पापा... यह राहुल है...मेरे ही कार्यालय में कार्य करता है, मैं इसे पसंद करती हूं और इससे ही शादी करना चाहती हूं।'

गुप्ता जी हक्के-बक्के रह गए, उनसे कुछ कहते न बना, सो तुरंत ही रजनीश बाबू के पास आ गए और अपनी समस्या कह सुनाई।

रजनीश बाबू ने भी गुप्ता जी पर कटाक्ष करने में देर न लगाई, वह बोले- 'और बिठाओ लड़कियों को ऊपर...देखा आधुनिक बनाने का कैसा नतीजा होता है, न आपकी

लड़की किसी कार्यालय में काम करने जाती और नही आपको यह दिन देखना पड़ता।'

गुप्ता जी ने कहा- 'रजनीश बाबू...अब तो मेरा इस समस्या से पीछा छुड़ाओ।'

'ठीक है... मैं आपके साथ चलता हूं।' रजनीश बाबू गुप्ता जी के घर की ओर चल दिए।

गुप्ता जी की लड़की सुनयना अब भी अपनी जिद्द पर अड़ी थी- कह रही थी- 'शादी करूंगी तो राहुल से ही।'

रजनीश बाबू ने सुनयना को ऊंच-नीच समझाई और कहा- 'बेटी अपनी बिरादरी में ही शादी जैसा संबंध जोड़ा जाता है, अन्य बिरादरी के रीति रिवाज तुम भला कैसे सहोगी?'

'अंकल...आप जानते हैं कि मेरी बिरादरी में योग्यता की कोई कद्र नहीं है, बिना दहेज के मुझसे कोई ब्याह करने को तैयार नहीं, मैं समाज के साथ चल रही हूं, अपने पैरों पर खड़ी हूं, मुझे किसी भी सहारे की आवश्यकता नहीं है, मैं कमजोर भी नहीं हूं कि आसानी से हार मान जाऊं, मैंने जो फैसला लिया है, यदि आप उस पर मेरा साथ देते हैं तब ठीक है, अन्यथा मैं जो फैसला कर चुकी हूं, उसे पूरा करूंगी ही।'

लम्बे विचार विमर्श के उपरांत गुप्ता जी ने अपनी बेटी सुनयना के फैसले का सम्मान करते हुए सुनयना की शादी राहुल के साथ कर दी।

रजनीश बाबू भुनभुना कर रह गए, अब उनकी जुबान पर सुनयना का ही प्रसंग रहता है कि वह कितनी जिद्दी लड़की है, किसी की नहीं सुनी अपनी ही करके मानी।

समय बीता, रजनीश बाबू के पुत्र कमल की नौकरी अध्यापक के रूप में लग गई, जहां उसकी मुलाकात आरक्षित वर्ग की अध्यापिका रचना से हो गई, उनका प्रेम-प्रसंग कब पेंग बढ़ाकर विवाह के स्वप्न संजोने लगा आभास ही नहीं हुआ।

अंततः एक दिवस कमल रचना को अपने साथ घर ले आया और रजनीश बाबू से बोला- 'पिताजी...यह रचना है...मेरे साथ काम करती है, मैं इसी को अपनी जीवनसंगनी बनाना चाहता हूं।'

'क्या तुम्हारा अंतिम फैसला है...?' रजनीश बाबू की आंखों के सम्मुख अंधेरा छा गया।

'हां...।' कमल ने कहा।

रजनीश बाबू की पत्नी सुरभि प्रश्नभरी नजरों से अब रजनीश बाबू को देख रही थी।

-प्रस्तुति : साध्वी कनकलता

मंत्र की शक्ति

प्रतिदिन लोग नहाते-धोते हैं, पूजा करते हैं, भोजन से पूर्व या किसी शुभ कार्य को आरंभ करने से पहले मंत्र पाठ करते हैं। यह मंत्र-पाठ कुछ लोग सुनकर और कुछ पुस्तकों से पढ़कर याद कर लेते हैं। वे मंत्र-पाठ कितने शुद्ध होते हैं यह प्रायः लोगों को पता नहीं होता। कुछ व्यावसायिक पंडित तो हवन, कथा-पूजा आदि के समय बेधड़क होकर अशुद्ध मंत्र-पाठ करते हैं और श्रोता, उन मंत्रों की शुद्धता से अनभिज्ञ होने के कारण पूरी तन्मयता से उन्हें सुनते हैं। जो मंत्रों के शुद्ध पाठ से परिचित हैं, उनके कानों में अशुद्ध मंत्र-पाठ या कोई श्लोक आदि का भ्रष्ट उच्चारण, गर्म तेल की भांति कष्ट पहुंचाता है। यह मानते हुए भी ऐसे अशुद्ध मंत्र-पाठ से कोई उपलब्धि नहीं होती-कोई हवन-पूजा सार्थक नहीं होती।

एक बार श्रीरामकृष्ण परमहंस से किसी भक्त ने पूछा था- 'स्वामीजी मंत्र में क्या वास्तव में शक्ति होती है। अगर कोई आदमी किसी से मंत्र सुनकर या पुस्तक में पढ़कर मंत्र रट कर उसका पाठ करने लगे तो क्या उन मंत्रों से हमें अभीष्ट फल मिलेगा?' स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा- 'इस तरह कुछ भी उपलब्ध नहीं होता। मंत्र तो तब प्रभावशाली होता है, जब उसे कोई ज्ञाता और आधिकारिक व्यक्ति पढ़ता है। उन मंत्रों में प्रभाव तभी आता है, जब उनका शुद्ध पाठ हो।' रामकृष्ण परमंस ने एक कथा सुनाई- 'एक राजा का महामंत्री प्रातःकालीन पूजा और जाप कर रहा था, अचानक वहां राजा आ गया। महामंत्री को मंत्र-जाप करते देखकर रुक गया। महामंत्री पूजा से निवृत हुए तो सीधे राजा के पास आए। राजा ने पूछा, 'आप किस मंत्र का जाप कर रहे थे?' 'मैं गायत्री-मंत्र का जाप कर रहा था।' राजा ने कहा, 'हमें भी यह मंत्र सिखा दो।'

महामंत्री ने मंत्र सिखाने में असमर्थता प्रकट कर दी। राजा चिढ़ गया। अगले ही दिन उसने एक पंडित को पकड़ बुलवाया और अससे गायत्री मंत्र सीख लिया। फिर राजा ने महामंत्री के सामने मंत्र-पाठ करके पूछा- 'ये बताओ कि यह शुद्ध है कि नहीं?' महामंत्री ने कहा- 'मंत्र के शब्द तो वही हैं, पर उनके पाठ में वह गुण और प्रभाव नहीं है, जो अभीष्ट फल दे।' राजा को आश्चर्य हुआ और उसने महामंत्री से कहा कि इस बात को वह दृष्टांत देकर समझाए। महामंत्री ने तब वहां खड़े एक नौकर से कहा- 'राजा के गाल पर दो तमाचे जड़ दे।' लेकिन उस नौकर की हिम्मत न पड़ी। राजा को बुरा

लगा कि महामंत्री ने एक नौकर से मुझे तमाचे मारने को कहा। राजा ने गुस्से में भरकर उसी नौकर से कहा- 'तू महामंत्री के मुंह पर चार तमाचे मार।' और नौकर ने चार तमाचे महामंत्री के मुंह पर जड़ दिए। 'देखा महाराज! यह है मंत्र-शक्ति। वही शब्द मैंने बोले, तो उनका कोई असर न हुआ। आपने कहा तो इस पर असर हो गया और मुझे चार तमाचे मार दिए।

मंत्र में यही शक्ति होती है, जिसे कोई उसका ज्ञाता और पात्र व्यक्ति ही प्रभावशाली रीति से पढ़ सकता है कि अभीष्ट फल प्राप्ति हो।

-प्रस्तुति : अरुण तिवारी

खोने का दर्द

गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि नश्वर देह के मरने पर भी आत्मा नहीं मरती। पर क्या यह कथन वास्तव में देहधारियों के काम आता है? व्यक्ति अपने प्रियजन को खोने के बाद जीवन का सामना करने की शक्ति खो बैठता है। धर्म, दर्शन, आत्मा और अमरत्व सब बातें निरर्थक लगने लगती हैं।

यह जानते हुए भी कि मरण जीवन का अंतिम कृत्य है, इस जाने-पहचाने जगत में अनजान लोक की ओर ले आनेवाली मृत्यु भयानक लगती है। मान भी लें कि आत्मा अमर है, पर उससे संबंध जोड़ पाना निर्गुण ब्रह्म की साधना के समान कठिन है। पीड़ित व्यक्ति को जीवन में आए दर्द से जुड़े प्रश्न परेशान करते हैं- यह दर्द जीवन में क्यों आया?

इससे कैसे उबरा जा सकता है? 'क्यों' का रहस्य कभी नहीं खुल पाता है। न ही इसका कोई तर्कपूर्ण जवाब होता है। पर कैसे इस स्थिति से निकला जाए, इसका उत्तर अवश्य है। इस दर्द से छुटकारा कभी नहीं मिल सकता, पर उससे लड़ने की ताकत जुटाई जा सकती हैं किसी भी स्थिति से या हम हार सकते हैं या उसे हराने के उपाय सोच सकते हैं। जैसे तूफान में फंसा पक्षी पल भर को भी अपने पंख झुका ले तो टूट कर धरती पर आ गिरता है, पंखों को ऊपर रखने से बच जाता है।

-प्रस्तुति : ज्योति कानुगा 'गरिमा'

विराटा की पद्मिनी

मकर-संक्रांति के स्नान के लिए दिलीप नगरी के राजा नायक सिंह पहूज में स्नान करने के लिए विक्रमपुर आए। विक्रमपुर पहूज नदी के बाएं किनारे पर बसा हुआ था। नगर छोटा-सा था, परंतु राजा और राजसी ठाठ-बाठ के इकट्ठे हो जाने से चहल-पहल और रौनक बहुत हो गई थी।

एक दिन दोपहर के समय स्नान का मुहूर्त था। राजा के कुछ दरबारी संध्या के उपरांत राजभवन में मुजरा के बहाने गपशप के लिए आ गए। जनार्दन शर्मा मंत्री न था, तथापि राजा उसे मानते बहुत थे। वह भी आया।

राजा ने जनार्दन से कहा, 'पहूज में तो पानी बहुत कम है। डुबकी के लिए पीठ के बल लेटना पड़ेगा।'

'हां महाराज, 'जनार्दन ने कहा, 'पानी मुश्किल से घुटनों तक होगा। थोड़ी दूर पर एक कुंड है, यदि मर्जी हो तो उसमें स्नान हो।' अधेड़ अवस्था का दरबारी लोचन सिंह, जो अपने सनकी स्वभाव के लिए विख्यात था, बोला, 'दो हाथ के लंबे-चौड़े उस कुंड में डुबकी लगाकर कीचड़ उछालना होली के हुल्लड़ से कम थोड़े ही होगा।'

जिस समय लोचन सिंह राजा के सामने बातचीत करने के लिए मुंह खोलता था, अन्य दरबारियों का सिर घूमने लगता था। लोचन सिंह की बात पर राजा ने गरम होकर कहा, 'तुम सबको कोस-भर नदी खोद कर गहरी करनी पड़ेगी।

लोचन सिंह बोला, 'मैं अपनी तलवार की नोंक से कोस-भर तो क्या बेतवा को भी खोद सकता हूं हुक्म-भर हो जाए।'

राजा का कोप तो कम न हुआ, परंतु खीज बढ़ गई। सैयद आगा हैदर राजवैद्य एक सावधान दरबारी था। मौका देखकर बोला 'महाराज की तबीयत कुछ दिनों से खराब है। धार्मिक कार्य थोड़े जल से भी पूरा किया जा सकता है। अगर मुनासिब समझा जाए तो गहरे, ठंडे पानी में देर तक डुबकी न ली जाए।

लोचन सिंह तुंरत बोला, 'जितना पानी इस समय पहूज में है, वह बीमारी को सौ गुना कर देने के लिए काफी है।'

राजा ने दृढ़तापूर्वक कहा- 'यही तो देखना है लोचन सिंह। बीमारी बढ़ जाए तो हकीमजी के हुनर की परख हो जाए और यह भी मालूम हो जाए कि तुम मुझे पानी में एक हजार डुबकियां लगाने से कैसे रोक सकते हो?'

लोचन सिंह बोला- 'हकीम जी का कहना न मानकर जब महाराज को डुबकी लगाने पर उतारू देखूंगा, तब अपना गला काट कर उसी जगह डाल दूंगा, फिर देखा जाएगा। लोचन सिंह की सनकी से राजा की भड़क का ज्वार बढ़ा। बोला, 'शर्माजी, पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। पहले तुमने नहीं बतलाया, नहीं तो उस कंबख्त नदी की तरफ सवारी न जाती।'

'महाराज!' जनार्दन ने सकपका कर कहा- 'मुझे स्वयं पहले से मालूम न था।'

राजा बोले- 'बको मत। तुम्हारे षड्यंत्रों को खूब समझता हूं। कुंजर सिंह को बुलाओ।

कुंजर सिंह राजा की दासी का पुत्र था। वह राज्य का उत्तराधिकारी न था, तो भी राजा उसे बहुत चाहते थे। राजा के दो रानियां थी। बड़ी रानी उसे चाहती थी, इसलिए छोटी का उस पर प्यार न था। राजा बहुत वृद्ध न हुए थे। इधर-उधर के कई रोगों के होते हुए भी राजवैद्य ने आशा दिला रखी थी कि उत्तराधिकारी उत्पन्न होगा। इसलिए राजा ने दूसरा विवाह भी कर लिए था और दासियों को बढ़ाने की प्रवृत्ति में भी, चाहे पागलपन से प्रेरित होकर चाहे किसी प्रेरणावश, बहुत अधिक कमी नहीं हुई थी।

कुंजर सिंह आया। बीस-इक्कीस वर्ष का सौंदर्यमय बलशाली युवा था। राजा ने उसे अपने पास बिठा कर कहा- 'कल पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। हमको व्यर्थ ही यहां लिवा लाए।'

आत्मरक्षा में हकीम को कहना पड़ा, 'थोड़ी देर के स्नान से कुछ नुकसान न होगा। राजा बोले- 'तब पालर की झील में डुबकी लगाई जाएगी, बड़े सवेरे डेरा पालर पहुंच जाए।'

पालर ग्राम विक्रमपुर से चार कोस की दूरी पर था। चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई पालर की झील में गहराई बहुत थी। उसमें डुबकियां लगाने के परिणाम का अनुमान करके आगा हैदर कांप गया। बोला- 'ऐसी मर्जी न हो। झील बहुत गहरी है और उसका पानी बहुत ठंडा है।'

और तुम्हारी दवा घूरे पर फेंकने लायक।' राजा ने हंसकर और तुरंत गंभीर होकर कहा- 'तुम्हारे कुश्त में कुछ गुण होगा और तुम्हारी शेखी में कुछ सच्चाई, तो झील में नहाने से कुछ न बिगड़ेगा।'

जनार्दन विषयांतर के प्रयोजन से बोला- 'अन्नदाता, सुना जाता है पालर में एक दांगीके घर दुर्गजी ने अवतार लिया है। सिद्धि के लिए उनकी बड़ी महिमा है।'

'तुमने आज तक नहीं बतलाया?' राजा ने कड़क कर पूछा और तकिए पर अपना सिर रख लिया।

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, सुनी हुई खबर है। गलत निकलती है तो कहने वाले को यों ही अपने सिर की कुशल के लिए चिंता करनी पड़ती।'

राजा ने जनार्दन से प्रश्न किया, 'इस अवतार को हुए कितने दिन हो गए?'

'सुनता हूं, अन्नदाता, कि वह लड़की अब सोलह-सत्रह बर्ष की है।' जनार्दन ने राजा को प्रसन्न करने के लिए उत्तर दिया, पालर में तो उसके दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।'

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

चुटकुले

1. पिंटू के पैर में गहरा कट लग गया
नर्स - इसमें दस टांके लगेंगे।
पिंटू - कितना खर्चा आएगा।
नर्स - तीन हजार रूपये।
पिंटू - टांके लगवाने हैं कढ़ाई नहीं करवानी।

2. टीचर - इतनी मार खाने के बाद भी तुम हंस रहे हो।
मोनू - क्योंकि बड़ों ने कहा है कि मुसीबत का सामना हॅसकर करा चाहिए।

3. चिंटू - पिताजी, आज मुझे एक लड़के ने मारा,
पिताजी - क्या तुम उसे पहचान सकते हो,
चिंटू - हां पापा, मैं उसके दांत साथ लाया हूं।

4. एक घर में चोरी की नीयत से घुसे चोर को वहां की मोटी औरत ने पकड़ा और उसके ऊपर चढ़कर बैठ गई फिर अपने नौकर से बोली, जा जल्दी से पुलिस को बुला ला।
नौकर घवरा कर बोला- बीबी जी मेरी चप्पल नहीं मिल रही। चोर जोर से बोला- ओह यार तू मेरी चप्पल पहन ले पर जल्दी जा।

5. प्रवीण चन्दन से - तुम हर संडे को होली क्यों मनाते हो।
चन्दन - बस ऐसे ही यार, मैंने बचपन में पढ़ा था। संडे इज द होली डे।

-प्रस्तुति : जय तिवारी

ऐसे थे चाणक्य

यह बात उस समय की है, जब भारत पर चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन था और आचार्य चाणक्य यही के महामंत्री थे। चाणक्य, चन्द्रगुप्त के गुरू भी थे। वे अपनी योग्यता और कर्तव्य पालन के लिए देश-विदेश में सभी जगह प्रसिद्ध थे। उन्हीं दिनों एक चीनी चात्री भारत आया तो उसकी इच्छा महामंत्री चाणक्य से मिलने की हुई। पाटलीपुत्र उस समय भारत की राजधानी थी। वहीं पर चाणक्य और सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य भी निवास किया करते थे। वह चीनी यात्री घुमते हुए पाटली पुत्र पहुंच गया। उस ने गंगा के किनारे एक वृद्ध व्यक्ति को देखा, जो स्नान करके अपनी धोती धो रहा था। उस वृद्ध व्यक्ति ने धोती धोकर अपने लिए घड़े से पीने का पानी लिया और वहां से चल दिया। चीनी व्यक्ति ने आगे बढ़कर उस वृद्ध व्यक्ति को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और पूछा- 'श्रीमान मैं चीनी का निवासी हूं। यहां मैं आपके महामंत्री चाणक्य से मिलना चाहता हूं। क्या आप मुझे उनका पता बताएंगे।

वृद्ध व्यक्ति ने चीनी से कहा- अतिथि की सहायता करके मुझे प्रसन्नता होगी। आप कृपा करके मेरे साथ चलें। वह मार्ग नगर की ओर न जाकर जंगल की ओर जा रहा था।

थोड़ी देर पश्चात वृद्ध व्यक्ति एक आश्रम के निकट पहुंचकर रूका और चीनी यात्री को वह थोड़ी देर प्रतिक्षा करने के लिए कहकर अन्दर चला गया।

कुछ ही क्षणों में चीनी यात्री के कानों में आवाज टकराई- 'महामंत्री चाणक्य अपने अतीथि का स्वागत करता है। पधारिये महाशय।

चीनी यात्री ने जैसे ही अपनी आंखें ऊपर उठाई तो वह आश्चर्य चकित रह गया। यह वही वृद्ध व्यक्ति था। चीनी यात्री के मुंह से निकला- 'आप'।

हां महाशय! वृद्ध व्यक्ति बोला- मैं महामंत्री चाणक्य हूं और यही मेरा निवास स्थान है आप निश्चित होकर आश्रम पधारें। चीनी यात्री आश्रम के अन्दर तो आ गया परन्तु उसका मन हजारों आशंकाओं से घिरा हुआ था। वह बार-बार सोच रहा था कि इतने बड़े देश का महामंत्री इतना सादा जीवन विताता होगा।

चीनी यात्री के चेहरे पर बिखरे हुए भावों को समझते हुए चाणक्य बोले- महाशय आप सायद विश्वास नहीं कर पा रहे हैं कि इस विशाल राज्य का महामंत्री हूं तथा यह आश्रम मेरा स्थान है। आप विश्वास किजिए कि ये दोनों बात सत्य है।

संयोगवश उसी समय वह सम्राट चन्द्रगुप्त अपने कुछ कर्मचारियों के साथ आ गए। उन्होंने अपने गुरू आचार्य चाणक्य के चरण शपर्श किये और कहा- देव, राज्यकार्य के सम्बन्ध में आप से कुछ जरूरी सलाह लेनी थी। उसी के लिए मैं यहां उपस्थित हुआ हूं। आचार्य चाणक्य ने आशीर्वाद देते हुए कहा- उस बारे में हम बाद में बात करेंगे। अभी तो तुम हमारे अतीथि से मिलो, 'ये चीनी यात्री है। इन्हें तुम अपने साथ राजमहल में ले जाओ, तथा इनका सादर-सतकार करो और फिर संध्या को भोजन के पश्चात इन्हें मेरे पास लाना।

संध्या को सम्राट, चीनी यात्री के साथ पुनः आचार्य के आश्रम में पहुंचे जहां आचार्य किसी राजकीय कार्य में व्यस्त थे। सामने ही एक दीपक जल रहा था। दोनों आचार्य को प्रणाम कर एक ओर विछे आसने पर बैठ गए।

आचार्य चाणक्य ने अपने लेखन सामग्री एक ओर रख दी और जलते हुए दीपक को बुझाकर, निकट ही रखा दूसरा दीपक जला दिया। इसके बाद उन्होंने चीनी यात्री से पूछा, 'महाशय, कैसा लगा आपको हमारा देश? 'चीनी यात्री ने नम्रता से उत्तर दिया- 'आचार्य मैं इस देश के वातावरण और निवासियों से बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूं। लेकिन मैंने यहां पर अनेक विचित्रताएं भी देखी हैं, जो मेरी समझ से परे हैं।'

'कौन सी विचित्रताएं मित्र?' आचार्य ने स्नेह से पूछा। चीनी यात्री ने कहा- 'उदाहरण के लिए सादगी की बात ली जा सकती है। इतने बड़े देश के महामंत्री का जीवन यहां इतना सदगी से भरा होगा, इसकी तो कल्पना भी हम विदेशी नहीं कर सकते।' इसके पश्चात कुछ झिझकते हुए चीनी यात्री ने अपनी बात को आगे बढ़ाया। उसने कहा- 'अभी जब हम यहां पर आए थे तो आप एक दीपक की रोशनी में कुछ काम कर रहे थे। हमारे आने के बाद आपने उस दीपक को बुझाकर दूसरा दीपक जला दिया। मुझे तो ये दोनों दीपक एक जैसे लगे। फिर एक दीपक बुझाकर दूसरे को जलाने का रहस्य मेरी समझ में नहीं आया।'

आचार्य चाणक्य ने मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया- 'इसमें न तो कोई रहस्य है न कोई विचित्रता। इन दो दीपकों में से एक में राजकोष का तेल है और दूसरे में मेरे

अपने परिश्रम की आमदनी से खरीदा गया तेल है। जब आप लोग यहां आए थे में उस समय राजकर्य कर रहा था, इसलिए उस समय राजकोष के तेल वाला दीपक जल रहा था। इस समय में आप लोगों से व्यक्तिगत बातें कर रहा हूं इसलिए इस समय राजकोष के तेल वाला दीपक जलाना उचित नहीं था।'

चाणक्य की बात सुनकर चीनी यात्री दंग रह गया। बोला- 'धन्य हो आचार्य! भारत की प्रगति और उसके विश्व गुरू बनने का रहस्य अब मुझे समझ में आ गया है। जब तक यहां के लोगों का राष्ट्रीय चरित्र इतना ही उन्नत और महान बना रहेगा, तब तक इसकी प्रगति को संसार की कोई शक्ति नहीं रोक सकेगी। इस महान देश की यात्रा करके और आप जैसे लोगों से मिलकर मैं अपने को गौरवशाली महसूस कर रहा हूं।

-प्रस्तुति : प्रदीप मल्होत्रा

जानकारी

सुख समृद्धि हेतु टोटके और उपाय

- सूर्य देव को प्रसन्न करने के लिए नियमित उन्हें लाल फूल, लाल चंदन, गोराचन, शुद्ध कैसर, जावित्री, जौ आथवा तिल युक्त जल समर्तित करें।
- प्रातः दुकान, प्रतिष्ठान, कार्यालय, आफिस आदि खोलने से पूर्व लक्ष्मी का ध्यान अवश्य कर लिया करें।
- बुजर्गों का आशीर्वाद अवश्य लें।
- लक्ष्मी साधकों के लिए चमकीला पीले रंग का ऊन अथवा रेशम का आसन एवं कमलगट्टे की माला सिद्धि में विशेष रूप से सहायक है।
- लक्ष्मी पूजा, धन प्राप्ति साधना में दीपक दाएं, गुलाब की अगरबत्ती आदि बाएं पुष्प सामने थाली में नैवेद्य दक्षिण दिशा में रखें।
- साधना, पूजा, प्रार्थना के समय स्वयं का मुंह पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में हो।
- प्रत्येक शनिवार को घर की सफाई अवश्य करें।
- घर के मुख्य द्वार के ऊपर गणेश की प्रतिमा अथवा चित्र इस प्रकार लगाएं कि उनका मुख घर के भीतर की ओर रहे। उस पर प्रातः हरी दूर्वा अवश्य अर्पित करें।
- मन में नित्य यह संकल्प दोहरा लिया करें कि 'मुझे श्रीवान बनना है।'
- घर की रसोई में गुरुवार के दिन काली तुम्बी लाकर टांग दें।

- घर में स्थापित देवी-देवताओं को कुंकुम, चंदन, पुष्पमाला आदि अर्पित करें।
- प्रातःकाल झाड़ू अवश्य लगा दें।
- संध्या से पूर्व घर में दीपक अवश्य जला दें। घर की महिलाएं देवी-देवताओं की नियमित आरती करें।
- गुरुवार के दिन किसी भी महिला को सुहाग सामग्री दान में देने का क्रम बनाएं।
- सफेद बस्तुओं का दान करने से लक्ष्मी योग बनता है।
- जब भी बाहर से घर में आएं तो कुछ न कुछ लेकर ही प्रवेश करें।
- काली हल्दी की एक गांठ व्यवसायी अपने कैश बाक्स में, गल्ला व्यापारी अपने गल्ले में रखें।
- घर की दीवारों पर खरोंच के निशान न बनने दें, इससे ऋण बढ़ता है।
- बरगत के पत्ते गुरु पुष्य या रवि पुष्य में लाकर उन पर हल्दी से स्वास्तिक बनाकर घर में रखें।
- शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन काले घोड़े के आगे के दांत-पैर की नाल लाएं उसे गंगाजल से धो लें। अब इसे दुकान, मकान के द्वार पर ठोक दें तो धनागमन प्रारम्भ हो जाएगा। इसको अगर घर की अलमारी में रखा जाएगा तो वस्तुओं की वृद्धि शुरू हो जाएगी।
- सम्पत्ति में बरकत हेतु किसी भी गुरुवार को बाजार से जलकुम्भी ले आओ। उसे पीले कपड़े में लपेटकर लटका दो। इस क्रिया में जलकुम्भी को एक बार लटका देने के पश्चात उसे दोबारा छूना निषेध है। स्मरण रखें, जलकुम्भी ठहरे हुए पानी में स्वयं ही उत्पन्न होती है।
- काली बिल्ली के जेर को तिजोरी, व्यापार स्थल या जेब में रखने से जीवन धन-धान्य से पूर्ण होता है। यह प्रयोग मैंने स्वयं समय-समय पर आजमाया है और शत-प्रतिशत ठीक पाया है।
- शुक्ल पक्ष में गुरुवार के दिन घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार पर एक कोने को गंगाजल से धो लें। इसके पश्चात हल्दी से स्वास्तिक बनाएं। उस पर चने की दाल और थोड़ा-सा गुड़ रख दें और शहद भी डाल दें। इसके बाद स्वास्तिक को बार-बार न देखें। प्रभु कृपा से आप शीघ्र ही लाभ का अनुभव करेंगे। यह एक शुद्ध सात्विक क्रिया है।

-प्रस्तुति : साध्वी समताश्री

कहानी

ढपोर शंख

एक सुंदर और खुशहाल राज्य था रत्नपुर। वहां का राजा रत्नसिंह बड़ा ही पराक्रमी था। वह प्रजा का हर प्रकार से ध्यान रखता था। दूर-दूर तक राजा और राज्य की ख्याति थी, जिससे अन्य राज्यों में रत्नपुर के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो गई।

रत्नपुर के पास देवनगर राज्य था। वहां का राजा देवप्रताप रत्नपुर की खुशहाली से जलता था। उसके पास एक अद्‌भुत शंख था, जिसे वह ढपोर शंख कहता था। वह बहुत सी गप्पें सुनाता था। देवप्रताप ने अपने राजदूत के हाथों रत्नसिंह को वह ढपोर शंख भेदिए के रूप में भिजवा दिया। ढपोर शंख पाकर रत्नसिंह फूला न समाया। उसने ढेर सारे उपहार देकर राजदूत को विदा किया।

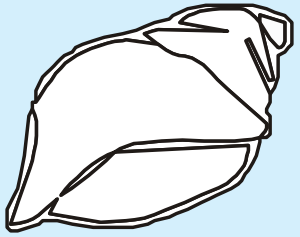

अब तो राजा रत्नसिंह प्रतिदिन राजकाज से निवृत्त होकर ढपोर शंख से कोरी गप्पें तथा मनगंढत किस्से सुनता। लेकिन जल्द ही रत्नसिंह राजा देव प्रताप के फैलाए जाल में फंस गया। ढपोर शंख के बिना राजा रत्नसिंह का मन किसी कार्य में नहीं लगता था। उसने धीरे-धीरे राज सभा में आना ही बंद कर दिया।

ढपोर शंख की संगत का रत्नसिंह पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह स्वयं भी गप्पें हांकने लगा। हर समय गप्पें गढ़ता और सबको सुनाता। अति तो तब हो गई, जब रत्नसिंह राज्य सभा में गप्पें सुनाता और सुनता। अन्य सभी आवश्यक कार्यों पर वह कोई चर्चा न करता। राजा में आए इस अनोखे परिवर्तन से सभी दुखी तथा नाराज थे। परंतु कोई भी कुछ कहने का साहस न करता।

धीरे-धीरे राज्य व्यवस्था गड़बड़ाने लगी। लेकिन राजा को तनिक भी चिंता नहीं थी, बल्कि उसने एक अनोखी प्रतियोगिता का आयोजन कर डाला। यह एक गप्प प्रतियोगिता थी। उसमें जो गप्पी सबसे अच्छी गप्प हांकेगा, उसे राज्य का सबसे बड़ा गप्पी घोषित किया जाएगा। प्रतियोगिता में राजा रत्नसिंह स्वयं भी शामिल था। प्रतियोगिता वाले दिन राजसभा में गप्पियों की भीड़ एकत्रित हो गई। सारे रत्नपुर से विचित्र से विचित्र गप्पी आए थे। रत्नसिंह बड़ा ही खुश था। लेकिन तब उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि प्रतियोगिता में उसके प्रत्र राजकुमार देव्यांश ने भी भाग लिया है। प्रतियोगिता शुरू हुई। देखते ही देखते सारे गप्पी धराशाई हो गए। रत्नसिंह के आगे कोई

भी टिक न पाया। सबसे अंत में राजा और राजकुमार में गप्प प्रतियोगिता हुई। लेकिन शीघ्र ही राजकुमार देव्यांश राजा से हार गया। रत्नसिंह प्रतियोगिता में जीतते ही खुशी से चिल्ला उठे- ''मैं राज्य का सबसे बड़ा गप्पी हूं।''

''नहीं, पिता जी! यह सच नहीं है।'' - देव्यांश विनम्रता से बोला।

उसके मुंह से यह सुनकर रत्नसिंह ने क्रोधित होकर कहा- ''तुम कहना क्या चाहते हो राजकुमार देव्यांश?''

-''मैं यही कहना चाहता हूं कि आप राज्य के सबसे गड़े गप्पी नहीं बने हैं, अभी उस ढपोर शंख से आपकी प्रतियोगिता होनी बाकी है।''

राजा ने बड़े उत्साहपूर्वक ढपोर शंख राजदरबार में मंगवाया। उसे पूरी आशा थी कि वह आसानी से ढपोर शंख को हरा देगा। लेकिन हुआ कुछ और! ढपोर शंख की गप्पों के आगे रत्नसिंह ठहर नहीं सका। वह एक के बाद एक गप्प सुनाता, तो ढपोर शंख उससे भी बढ़कर गप्प सुना देता। रत्नसिंह खीज उठा। उसने क्रोधित होते हुए ढपोर शंख को जमीन पर पटक दिया। शंख चूर-चूर हो गया। यह देखकर राजसभा में उपस्थित महारानी मणिरत्ना के मुख पर मुसकान आ गई।

इस घटना के कुछ दिनों बाद ही राजा सामान्य हो गया। अब उसकी गप्प में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। उसे अपनी बीती हुई बातें सोच-सोचकर हंसी आती थी। उसे पता चल गया कि जीवन में संगत का कितना प्रभाव होता है। लेकिन वह इस बात से अबोध था कि ढपोर शंख से उसकी संगत छुड़ाने में राजकुमार देव्यांश और महारानी मणिरत्ना की गुप्त योजना थी- ढपोर शंख व रत्नसिंह की प्रतियोगिता।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

हर कोई अपने पिंजरे को सजाने में लगा है,
रगड़-रगड़कर बेड़ियों को चमकाने में लगा है,
नहीं चाहिए किसी को खुले आकाश की पहचान
इसलिए हर कोई मालिक को रिझाने में लगा है।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

मक्खन कितना पोषक कितना जरूरी! जानोगे तो मानोगे

मक्खन और हृदय रोग

मक्खन में फैटी एसिड्स की मात्रा संतुलित होती है। जब कि मक्खन के बदले उपयोग में लाए जाने वाली मार्गरिन जैसे पदार्थों में होते हैं सिंथेटिक टांस फैट्स ये हृदय के लिए नुकसानदायक होते है।

मक्खन और कैंसर

मक्खन में निहित सीएलए (कॉन्जुगेटेड लिनोलिक एसिड), स्फिंगोलिपिड्स और ब्युअिरिक एसिड कैंसर की रोकथाम करने में भूमिका निभाते हैं। मक्खन में सबसे ज्यादा सीएलए पाया जाता हैं।

मक्खन कुदरती पोषक तत्वों (न्युट्रिएंट्स) का स्रोत

मक्खन में पाया जाने वाला एसिड विटामिन ए आंखों को स्वस्थ रखता है। विटामिन डी कैल्शियम को पचाने में सहायक होता है। विटामिन ई एक कुदरती एंटीऑक्सीडेंट है. लिनोलिक एसिड जैसे आवश्यक फैटी एसिड्स भी मक्खन में अपने कुदरती रूप में पाए जाते हैं।

मक्खन और रोग प्रतिकारक प्रणाली

मक्खन में पाए जाने वाले जरूरी फैटी एसिड्स के कारण रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

मक्खन और ओस्टियोपोरोसिस/आर्थ्राइटिस

'विटामिन डी' कैल्शियम के आवशोषण में सहायक है। इससे बुढ़ापे में हड्डियां कमजोर नहीं होती। ये बच्चों में ओस्टियोमलेसिया (हड्डियां नाजुक होना) नामक रोग से भी बचाव करता है। करता है। मक्खन में पाया जानेवाला एंटीऑक्सीडेंट विटामिन ई कई प्रकार के आर्थ्राइटिस को रोकने में मददगार होता है।

मक्खन और पाचन क्षमता

मक्खन आसानी से पचने वाले फैटी एसिड का कुदरती स्रोत है मक्खन में शामिल कई प्रकार के फैटी एसिड्स अन्य फैट्स से बने मार्गरिन की तुलना में आसानी से एनर्जी में रूपांतरित होते हैं, अन्य पदार्थो के रूप में फैट और कार्बोहाइड्रेट का सेवन करने की तुलना में मक्खन से वजन बढ़ने की संभावना कम होती है।

मक्खन शारीरिक गतिविधि के आधार पर संतुलित मात्रा में सेवन किया जाना चाहिए।

-प्रस्तुति : डॉ. सोहनवीर सिंह

मासिक राशि भविष्यफल-जून 2012

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेषः–मेष राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभ फल दायक ही कहा जायेगा किन्तु कुछ सावधानियां भी बरतनी होंगी जैसे किसी अनजान व्यक्ति पर आंखबन्द करके विश्वास न करें। शत्रुओं से सावधान रहें। वाहन सावधानी से चलायें। जैसे कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा मिल सकता है।

वृषः– वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पराक्रम के बल पर श्रेष्ठ फल देने वाला है। किसी का उधार दिया हुआ पैसा आप इस माह वसूल कर सकते हैं। मित्रों से मदद मिलेगी किन्तु कोई अजनवी व्यक्ति नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकता है। यात्राएं सफल होंगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में यश, मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मिथुनः– मिथुन राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मिश्रित फल दायक है। आय से व्यय अधिक होगा, अतः मानसिक चिन्ता का कारण बनेगा। कोई सगा, सम्बन्धी या मित्र ही आपके खिलाफ खड़ा हो जायेगा। नये कार्य सम्बन्धी निर्णय सोच समझकर लें। हां कुछ रूका पैसा आपका वापिस मिल सकता है। सरकारी कार्यरत जातक भी कुछ परेशान रहेंगे। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्कः– कर्क राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते लभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। कार्य सम्बन्धी यात्रायें भी करनी होंगी जिनमें सावधानी अपेक्षित है। जब कोई निर्णय स्वंय न ले सके तो बुजुर्गों की सलाह एवं आशीर्वाद लें। कोई न्यायालय में लम्बित केश सुलझ सकता है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

सिंहः–सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आरम्भ व अंत अच्छा नहीं है तथा मध्य शुभ है। शुभ समय में भी मेहनत तथा यात्रायें काफी करनी पड़ेगी तब सफलता मिलेगी। अशुभ समय में शत्रु कार्य में अवरोध पैदा करेंगे। कोई रूपयों की अदायगी रूक सकती है। उधार भी लेना पड़ सकता है।

कन्याः– कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध्यलाभ देने वाला है। कार्यों की पूर्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम वांछित है। मित्र काम आएंगे व साझेदारी के कार्यों में सफलता के आसार हैं। किन्हीं जातकों का कोई पुराना रूका हुआ कार्य भी पूरा हो सकता है। नौकरी पेशा जातकों के लिए यह माह शुभ है।

तुलाः– तुला राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उतार-चढ़ाव लिए होगा। आय से व्यय अधिक होने की सम्भावना है। किसी अप्रिय समाचार के मिलने से मानसिक चिन्ता बनेगी। द्वितीय सप्ताह कुछ राहत देने वाला है। मित्र जन काम आयेंगे। इसके पश्चात अचानक किसी लाभ की आशा है या कोई महत्वपूर्ण सूचना मिल सकती है। मासान्त में फिर शत्रु परेशान करेंगे पर ये जातक उन पर काबू पा लेंगे।

वृश्चिकः–वृश्चिक राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक नहीं कहा जा सकता है। आय से व्यय अधिक होगा। आपका लिया हुआ कोई गलत निर्णय आपको हानि पहुंचा सकता है। किसी भी स्कीम में पैसा लगाने से पहले अच्छी प्रकार से सोचें तथा सलाह लें। परिवार में मन-मुटाव न आने दें।

धनुः– धनु राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मासारम्भ शुभ नहीं है, फिर भी आप धीरे-धीरे अपना लक्ष्य पाने की ओर अग्रसर होंगे। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सामान की खरीद फरोख्त में सावधानी बरतें। कार्य की अधिकता वश आप अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देंगे जिससे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा कई अवरोधों के चलते बनी रहेगी।

मकरः– मकर राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का उत्तरार्ध-पूवार्ध की अपेक्षा शुभ फल दायक रहेगा। शुभ समय में जहां आर्थिक लाभ होगा वहीं पर सामाजिक प्रतिष्ठा में भी लाभ होगा। मित्र व परिवार जन काम आएंगें। कोई भूमि-भवन सम्बन्धी लाभ भी सम्भावित है। अशुभ समय में कोई आपका मित्र ही शत्रु जैसा कार्य कर सकता है। सामाजिक मान सम्मान पर आंच आ सकती है।

कुम्भः–कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वाध शुभ है तथा उत्तरार्ध शुभफल दायी नहीं कहा जा सकता है। शुभ समय में आर्थिक लाभ होगा। मित्रों से मेल-जोल में बढ़ोतरी आयेगी तथा इन जातकों का वर्चस्व बढ़ेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा आत्म विश्वास में प्रगति होगी।

मीनः– मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अल्प लाभ वाला ही कहा जायेगा। सरकारी कर्मचारियों के लिए समय अच्छा है। विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा आदि में कड़ी मेहनत के पश्चात सफलता मिलेगी। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। कोई भूमि-भवन सम्बन्धी प्रसंग विचाराधीन आ सकता है। यात्राएं जहां तक हो सके न करें। तीर्थ यात्रा कर सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

–इति शुभम्

नवभारत टाइम्स द्वारा 'हंस अकेला' पुस्तक की समीक्षा

जैन मुनियों में आचार्य रूपचन्द्र जी का अपना अलग स्थान है। यह किताब उन्हीं की जीवनी है। किन-किन पड़ावों से गुजरकर गोद में खेलते एक साधारण बालक योगी का रूप लेकर दूसरों के दुखों को साझा करने के काम में लग गया, इसी का वर्णन किताब में है। तमाम घटनाओं को उपन्यास की शक्ल में पेश किया गया है। अध्यात्म व आध्यात्मिक पुरुषों के बारे में जानने की रुचि रखने वालों के लिए रोचक किताब है।

किताब : हंस अकेला
(औपन्यासिक जीवनी)
लेखक : विनीता गुप्ता
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
पेज : 292
कीमत : 395 रुपये

इसी प्रकार कुछ और पत्र-पत्रिकाओं में भी पुस्तक-समीक्षा की जानकारी मिली है, जिन्हें यथासमय प्रकाशित किया जा सकेगा।

संसदीय बाल विभाग द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में मानव मंदिर गुरूकुल के छात्र पुरस्कृत। पिछले माह संसदीय बाल विभाग द्वारा संसद भवन में On the Spot Painting Competition एवं Essay Competition आयोजित की गई। Painting Competition 8-14 वर्ष के बीच में थी तथा Essay Competition 14-18 उम्र के बच्चों के बीच। Painting Competition के विषय थे- (1) Parliament House (2) Save Water (3) Save Earth. Essay Competition के विषय थे- (1) देश की आजादी में गांधीजी का योग-दान (2) विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर (3) आपकी नजर में आजादी का तात्पर्य। इन प्रतियोगिताओं में करीब एक हजार छात्र विभिन्न NGOS तथा संसदीय कर्मचारियों के बच्चों ने भाग लिया। आप सबको सूचना देते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि इन प्रतियोगिताओं में पेंटिग्स में छात्र अशोक (कक्षा-5) तथा निबन्ध प्रतियोगिता में छात्र नमन (कक्षा-10) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र गौरव (कक्षा-10) और मानसी (कक्षा-5) को सान्त्वना पुरस्कार मिला। पिछले दिनों लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार ने स्वयं बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये। व्यवस्थापक अरूण तिवारी से मानव मंदिर गुरूकुल का परिचय पाकर माननीया मीरा कुमार ने प्रसन्नतापूर्वक जैन आश्रम में यथा समय आने की मंशा प्रकट की।

डॉ. जोस अब्राहम जैन आश्रम में

प्राकृतिक चिकित्सा योग तथा आयुर्वेद (पंचकर्म) की दिशा में आज सेवाधाम-हॉस्पिटल ने जो विकास और विस्तार लिया है, वह साध्वी समताश्री के श्रम और लगन का परिणाम है। किन्तु इसका बीज-वपन करीब पन्द्रह वर्षों पूर्व केरल-निवासी डॉ. जोस अब्राहम ने किया था। बहुत ही निष्ठावान् विनम्र तथा सादगी परायण व्यक्ति हैं डॉ. अब्राहम। करीब दस वर्ष पूर्व डॉ. साहब सपरिवार इंग्लैंण्ड चले गए। किन्तु उनके मन में मानव मंदिर गुरूकुल और हॉस्पिटल के साथ अपने-पन तथा आदर भाव में कोई कमी नहीं आई फोन से संपर्क तथा यथा-संभव अनुदान द्वारा वे बराबर जुड़े रहे। वर्षों पश्चात् इस बार डॉ. साहब दो दिनों के लिए जैन आश्रम में आए। पूज्य गुरूदेव, पूज्या साध्वीश्री तथा साधु-साध्वी समुदाय, गुरूकुल के बच्चे, सेवाधाम हॉस्पिटल, पेड़-पौधे, गायें सबसे माधुर्य के साथ मिलकर डॉ. साहब आनंद-विभोर हो रहे थे। ऐसे सेवाभावी एवं गुणग्राही व्यक्ति बिरले ही होते हैं।

जैन आश्रम, नई दिल्ली में पूज्य आचार्यश्री तथा पूज्या साध्वीश्री अपने धर्म-परिवार सहित यानंद बिराजमान हैं। पूज्यवर की 20 मई को सुनाम-यात्रा संभावित थी, किन्तु स्वास्थ्य-कारणों से उसे स्थगित करना पड़ा। वयोवृद्धा साध्वी चांदकुमारीजी साध्वी दीपांजी तथा साध्वी पद्मश्रीजी के साथ अभी सुनाम-प्रवास पर है। जून माह में आप भी चातुर्मास के लिए दिल्ली पधार जाएंगीं।

जीव जंतुओं का अनोखा संसार

• मच्छर काटते नहीं बल्कि डंक मारते हैं। मच्छर का जबड़ा नहीं होता और जब वह डंक मारता है तब एक नली के माध्यम से खून चूसता है। एक बार में एक मच्छर अपने वजन से लगभग डेढ़ गुना खून चूस सकता है।

• एक चीटीं अपने भोजन तक पहुंचने के लिए जटिल से जटिल रास्ता सफलतापूर्वक पार कर लेती है। चीटियों की इस संबंध में स्मरण शक्ति इतनी तेज होती है कि वह 20 या 25 बार के प्रयत्नों में मुड़े-तुड़े तथा कठिन रास्तें से भी गुजर कर अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाती हैं।

• प्रवासी पक्षी अपने घोंसले से सीधे कई सौ मील दूर तक उड़ सकते हैं, चाहे आकाश में बादल हो या रात का अंधेरा।

-प्रस्तुति : नमन जैन